25 अक्टूबर, 2015 को नागपुर में आयोजित किए जा रहे देवी अहिल्याबाई स्मारक समिति स्वर्ण महोत्सव कार्यक्रम के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

1. देवी अहिल्याबाई स्मारक समिति के स्वर्ण महोत्सव के अवसर पर आप सबके बीच आकर मैं गौरवान्वित हूं। देवी अहिल्याबाई स्मारक समिति के सभी सदस्यों को इस कार्यक्रम के आयोजन एवं वर्षों तक निरन्तर निःस्वार्थ सेवा एवं समर्पण के लिए उनका हार्दिक अभिनन्दन करती हूं। परोपकार के लिए समर्पित इस समिति ने निश्चय ही देवी अहिल्याबाई के जीवन मूल्यों को समाज तक पहुंचाया है-

''आत्मार्थं जीवलोके अस्मिन को न जीवति मानवः।

परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवतिः।।''

तात्पर्य यह है कि इस जीव लोक में स्वयं के लिए कौन नहीं जीता, परंतु जो परोपकार के लिए जीता है, वही सच्चा जीता है।

2. आज जब मैं लोकमाता देवी अहिल्याबाई होल्कर मंदिर के पचास वर्ष पूरे होने की बात सोचती हूं, तो ये विश्वास और दृढ़ हो जाता है कि **यदि किसी समिति या समूह द्वारा समाज के उत्थान एवं संस्कृति की रक्षा के लिए समाज में निरंतर उपयोगी कार्य किए जाए तो हम अपने मूल्यों एवं सिद्धान्तों को सुरक्षित रख सकते हैं तथा प्रचारित कर सकते हैं। ऐसी संस्थाएं भारतीय सभ्यता और संस्कृति की अग्रदूत कही जा सकती हैं। विकास और संस्कृति का सामंजस्य स्थापित करके इस विश्व को और सुन्दर बनाया जा सकता है।**

3. इस मंदिर की 25 अक्टूबर 1965 में स्थापना के साथ ही यह महिलाओं के लिए एक लोकप्रिय स्थान बन गया। यहां भक्ति, ज्ञान, कर्म तथा सेवा साधना करना

नित्य कर्म है। रानी लक्ष्मीबाई भजन मंडल के रूप में यह मंडली भक्ति भाव का प्रसार पूरे देश में कर रही है। यहां पर मैं महान विद्वान संत डॉ. शंकर अभ्यंकर जी की बात आपके समक्ष रख रही हूं। उनका कहना था कि ''यदि विश्व एक घर है तो इस देश का देवघर या पूजा घर है भारत''। अतः, यदि हमें विश्व को सुरक्षित रखना है तो अपनी सभ्यता और संस्कृति को अक्षुण्ण रखने का प्रयास करना हम सब की जिम्मेदारी है। यहां से धर्मशास्त्र और भक्ति की शिक्षा ग्रहण कर महिलाएं पूरे देश में खासकर पूर्वोत्तर में कई स्थानों पर पौरोहित्य का कार्य कर रही हैं। इस मंदिर में धर्म शास्त्र का अध्ययन निरंतर चलता रहा है। अभी यहां पर आर्ष गुरूकुल की श्रुतिकीर्ति जी गीता तथा संस्कृत व्याकरण के वर्ग ले रही हैं। यहां पर विविध विषयों की लगभग 7000 पुस्तकों वाला एक पुस्तकालय है, जो लोगों में ज्ञान बांटने में प्रमुख भूमिका निभा रहे हैं।

4. ज्ञान बांटने के क्रम में धंतोली में शिशु विहार भी काम कर रही है जिसमें छोटे-छोटे बालक की मराठी माध्यम में शिक्षा-दीक्षा इत्यादि का उत्तम प्रबंध निःशुल्क किया जाता है। वर्तमान सत्र में 70 बालक-बालिकाएं शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। मैं उन सबके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूं। इसी संस्था शिक्षित होकर अनेक विद्यार्थीगण आज राष्ट्र सेवा के कार्य में लगे हुए हैं।

5. देवी अहिल्याबाई स्मारक समिति पूर्वांचल कन्या छात्रावास इस समिति की सबसे महत्वपूर्ण परियोजना है। पूर्व में विदर्भ और छत्तीसगढ़ की कन्याएं इस छात्रावास में रहकर शिक्षा ग्रहण किया करती थीं। अब उनके साथ-साथ उत्तर पूर्व के राज्यों, असम, अरुणाचल, नागालैंड, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा आदि की छात्राएं यहां पर रहकर प्रथम से पोस्ट ग्रेजुएशन तक की शिक्षा ग्रहण कर रही हैं। उन सभी का यहां रहना-खाना निःशुल्क है और यह छात्रावास दानदाताओं के सहयोग से

चलता है। विभिन्न संकायों में शिक्षा ग्रहण करने वाली ये छात्राएं अपने-अपने क्षेत्रों में जाकर राष्ट्र निर्माण के लिए काम कर रही हैं। कोई नर्स हैं, तो कोई शिक्षिका हैं, तो किसी ने अपना स्कूल खोल लिया है। अपनी शैक्षिक उत्कृष्टता के बल पर वे पूरे देश में अपना जौहर दिखा रही हैं। आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पूर्वोत्तर की इन छात्राओं की प्रतिभा को सम्मानित करने के उद्देश्य से वर्ष **2014** से रानी मां गाईडिनिल्यु पुरस्कार की भी दिया जा रहा है।

6. इसके साथ ही इस मंदिर में योग की भी शिक्षा दी जाती है जिससे महिलाएं एवं पुरुष दोनों लाभान्वित हों। योग एक ऐसा ज्ञान है जिससे सम्पूर्ण समाज को लाभ ही लाभ होता है। कई महिलाओं ने अनुभव किया है कि उनके स्वास्थ्य में सुधार हुआ है।

7. इसी प्रकार मालतीबाई पटवर्धन रूग्नोपयोगी साहित्य सेवा केन्द्र के माध्यम से यह संस्था वरिष्ठ नागरिकों के कल्याणार्थ उनकी सुविधा हेतु नाममात्र के शुल्क पर साधन जैसे व्हील चेयर, वॉक, फाउलर्स बेड इत्यादि उपलब्ध कराती है। वर्ष **2014** में ''ऑटिस्टिक बालकों'' के विद्यालय को संस्था द्वारा **10** बेंच दान दिया गया, तो वर्ष **2015** में कैंसर रोगियों की सेवा करने वाली ''स्नेहांचल'' नामक संस्था को सोलर स्ट्रीट लाइट दिया गया। इस प्रकार के जनकल्याणकारी कार्य से अहिल्याबाई स्मारक समिति की साख बढ़ी है और वह समाज में आने वाले सकारात्मक बदलाव लाने में सक्षम हो सकी है। मेरी हदय से यही कामना है कि वह निरंतर सफलता के पथ पर अग्रसर होती रहे।

8. भारतीय सभ्यता और संस्कृति को यदि हम प्रतिष्ठित होते देखना चाहते हैं तो हमें स्वावलम्बी भी होना होगा। पूर्व में देवी अहिल्या मंदिर में एक उद्योग केन्द्र था

जहां पर घरेलू उपयोग की चीजें, यथा पापड़, मिरची, रोटी सब्जी का रौल इत्यादि बनाई जाती थी। स्वदेशी वस्तु भंडार के माध्यम से देश में स्वदेशी के उपयोग को बढ़ावा देने की सोच अत्यंत लाभकारी है और हमारा विकास समाज की हर इकाई के विकास के साथ ही संभव है। इस दिशा में देवी अहिल्या मंदिर एक समावेशी वृहत् इकाई (Integral Grand Unit) के रूप में निखरकर हमारे सामने आया है। महिलाएं किसी भी परिवार, समाज की धूरी हैं और उन्हीं पर समाज का विकास निर्भर करता है। इन सबके मूल में देवी अहिल्याबाई जी के सिद्धान्त और उनकी सोच थी। उनके महान विचारों ने महिलाओं को शक्ति सम्पन्न बनाने की मेरी वचनबद्धता में सदैव मेरा मार्गदर्शन किया है। उनके सन्देश और आदर्शों का प्रचार-प्रसार करने के लिए प्रतिबद्ध इस संस्था के नए भवन के गृह प्रवेश और वृक्षारोपण समारोह की यादें अब भी मेरे मन में ताजा हैं।

9. देवी अहिल्याबाई का जीवन मेरा प्रेरणास्त्रोत रहा है। ये विधि का विधान है कि इन्दौर मेरी भी कर्मभूमि बनी। मैंने देवी अहिल्या जी को पढ़ा, समझा और उनके आदर्शों पर अपने सामाजिक जीवन का ताना-बाना बुना। उनके व्यक्तित्व का प्रकाश मुझे दीप्तिमान करता रहा है, करता रहेगा और मुझे विश्वास है कि आप सबके लिए भी यह बात सच होगी। देवी अहिल्या जी का व्यक्तित्व असाधारण था। वे एक उदार शासक थीं। उन्होंने प्रजा हित में अनेक काम किए। लोकमाता अहिल्याबाई में वीरता और ममता का ऐसा अद्‌भुत सम्मिश्रण था, जो बहुत कम देखने को मिलता है। पुरुष प्रधान समाज में नारी शक्ति की अस्मिता की अनूठी पहचान थी माता अहिल्याबाई। यद्यपि उनका व्यक्तिगत जीवन संघर्षमय और कष्टमय रहा था, परंतु देवी ने अपनी आंतरिक शक्ति के बल पर प्रत्येक चुनौती का सक्षमतापूर्वक तेजस्विता के साथ मुकाबला किया और अपनी हर मुसीबत को अपनी योग्यता और शक्ति से पराजित

किया। महिलाओं विशेषकर विधवाओं के पूर्ण संरक्षण तथा लोक संस्कृति का संरक्षण इत्यादि कार्यों के लिए इतिहास सदैव उन्हें याद करेगा।

10. महान दार्शनिक प्लेटो ने कहा था- जब तक राजकीय प्रभुता तथा दार्शनिकता एक ही व्यक्ति में विद्यमान नहीं होगी, तब तक मानवता को उसके वर्तमान दुष्टतापूर्ण दोषों से मुक्त नहीं किया जा सकता। देवी अहिल्याबाई में दोनों का खूबसूरत सम्मिश्रण था। उन्हें दार्शनिक महारानी (philospher queen) भी कहा जाता है। अपने जनकल्याणकारी एवं उदार स्वभाव का होने के कारण ही उन्होंने प्रजाजनों के लिए मंदिर, घाटों, विश्रामस्थलों इत्यादि का निर्माण कार्य करवाया।

11. माता अहिल्याबाई स्वयं तो जीवन के उच्चतम पथ पर चलती ही थीं, साथ ही किसी योग्य व्यक्ति को सही पथ पर चलने के लिए प्रेरित भी करती थीं। उदाहरणार्थ, दक्षिण के संगमनेर निवासी यजुर्वेदी विद्वान अनंत फंदी, जो नृत्य संगीत से अपनी जीविका चलाते थे, को उन्होंने श्रृंगार रस से भक्ति रस की ओर प्रेरित किया था और आज भी अनंत फंदी जी का नाम मराठी साहित्य में बड़े आदर के साथ लिया जाता है।

12. देवी अहिल्याबाई के कुशल राज्य प्रबंधन के साथ साथ अशांति और उग्रता के उन दिनों में युद्ध से बचने और शान्ति कायम रखने की कला अद्वितीय थी। यह आश्चर्यजनक बात है कि वर्तमान लोकतांत्रिक शासन के आदर्श और कल्याणकारी मूल्य दो सौ से भी अधिक साल पहले देवी अहिल्याबाई के शासन में विद्यमान थे। वह अपने समय से आगे की सोचने वाली महिला थीं।उनके शासन में शांति और समृद्धि, न्याय, सामाजिक सद्भाव था और यहाँ के नागरिक और अधिकारी संतुष्ट थे। उन्होंने मध्य भारत के अधिकाँश भाग पर इतनी कुशलता से शासन किया कि उनके तीस साल लम्बे शासन को 'उदार

और प्रभावी शासन का मॉडल' माना जाता है। अपने प्रजाजनों का कल्याण उनके लिए सर्वोपरि था और इसीलिए उन्होंने ऐसे अनेक कानूनों को समाप्त किया जो लोगों के हितों के विरुद्ध थे।

13. माता अहिल्याबाई जी के जीवन मूल्यों पर चलते हुए देवी अहिल्या स्मारक समिति द्वारा किए जा रहे विभिन्न सामाजिक कार्यों की मैं सराहना करती हूं। स्वास्थ्य, शिक्षा, कौशल विकास, योग इत्यादि के माध्यम से संस्था द्वारा योग्य मानव संसाधन तैयार किए जा रहे हैं जो भविष्य में हमारी पूंजी होंगे। देश को योग्य एवं दक्ष नागरिक का तोहफा देने की दिशा में इनका कार्य सराहनीय है।

14. पूर्वोत्तर की बालिकाओं के शिक्षा-दीक्षा की व्यवस्था होने से सम्पूर्ण भारत की एकता और समावेशी विकास की जो हमारी सोच है, उसका जमीनीकरण होते देखकर मुझे बहुत खुशी होती है। मैं पहले भी यहां कई बार आई हूं। जब वे भारतीय संस्कृति में रची-बसी गुड़िया-सी दिखती हैं, उनके नृत्यादि सांस्कृतिक कार्यक्रम को देखती हूं, तो मैं मंत्रमुग्ध हो जाती हूं। मुझे लगता है कि मैं स्वयं ही अपने बचपन एवं किशोरावस्था की मधुर स्मृतियों में खो गई हूं।

15. आज के समाज का यह दायित्व है कि हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण रखते हुए तकनीकी ज्ञान का प्रयोग करके जहां एक ओर प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़े, वही दूसरी ओर अपनी सभ्यता, संस्कृति तथा सामाजिक संरचना को संजोकर रखें। हम अपनी भावी पीढ़ी को संस्कार रूपी डोर से बांधे, उन्हें आकाश की असीम उंचाई तक उड़ने दें, पर यह ध्यान रहे कि वह जड़ों से न कटने पाएं। हम अपने निजी और सामूहिक सामाजिक जीवन में लोकमाता के उच्च आदर्शों को अपनाएं और भारत को

एक स्वर्णिम युग की ओर ले जाएं। हम सुपथ पर आगे बढ़ते रहें। मैं कुछ पंक्तियां, जो मुझे निरंतर प्रेरित करती हैं, आपसे साझा करना चाहूंगीः-

''पद लोलुपता और त्याग का एकाकार नहीं होने का
दो नावों में पग धरने से सागर पार नहीं होने का
युगारम्भ के प्रथम चरण की,
गतिविधि को परिणाम न समझो
विजय मिली विश्राम न समझो।''

15. हमें निरंतर आगे बढ़ना है। परंतु, आदर्शों को छोड़कर नहीं बल्कि उनको साथ लेकर। एक ऐसी युवा पीढ़ी तैयार करनी है जो स्वयं समर्थ हों एवं आने वाली पीढ़ियों के लिए मिसाल बने। सत्कर्म, सदाचार एवं सद्व्यवहार उनके चरित्र में झलकना चाहिए। हम ऐसे योग्य एवं समर्थ शिष्य गढ़ें। मेरा मानना है कि किसी को भी श्रद्धांजलि देना हो तो हमें उनके आदर्शों एवं नीतियों का अनुपालन करना चाहिए। अपने जीवन में कर्मठता, सच्चाई, निष्ठा एवं कर्तव्यपरायणता के साथ-साथ उदारमना होना ही वास्तव में माता अहिल्याबाई को सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

16. आज जब हम देवी अहिल्या मंदिर के पचास साल पूरा होने का समारोह मना रहे हैं, तो मैं आप सबसे आग्रह करूंगी कि आप भी स्वयं को देशसेवा के प्रति इस प्रकार समर्पित करें जैसे लोकमाता देवी अहिल्याबाई ने अपने जीवन में स्वयं को अपनी मातृभूमि के प्रति समर्पित किया था। उनकी स्मृतियाँ उनके असाधारण परोपकारी कार्यों और उनके सम्मान में स्थापित संस्थाओं के रूप में जीवित हैं। मुझे ख़ुशी है कि देवी अहिल्याबाई स्मारक समिति जैसी संस्था अहिल्याबाई की विरासत और आदर्शों को आगे बढ़ाने और प्रोत्साहित करने के लिए ऐसे अच्छे प्रयास कर रही हैं। अपनी भावी पीढ़ी के लिए इस समृद्ध गौरवशाली इतिहास की रक्षा करना हमारा नैतिक कर्तव्य है।

17. इन्हीं शब्दों के साथ, मैं इस पावन अवसर पर आप सबको सम्बोधित करने का अवसर प्रदान करने के लिए आपको पुनः धन्यवाद देती हूँ ।

धन्यवाद।